वार्षिक अंक 37
मूल्य : 100 रुपये
ISSN : 2348 - 2672
दिसंबर 2021-22

लहक

साहित्य की वैचारिक पत्रिका

हिंदी विभागों की मनसबदारियां

कर्ण सिंह चौहान

जॉक लकान के सिद्धांतों की गहनता में प्रवेश का द्वार है अभिनवगुप्त

: अरुण माहेश्वरी

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का साहित्य-विमर्श

श्रीभगवान सिंह

चन्द्रकिशोर जायसवाल पर विशेष:

कल्लोल चक्रवर्ती/ धनेश दत्त पाण्डेय / पंकज साहा

लहक

कवर - १

लहक

कवर - १ इनसाइड

लहक

RNI No. - WBHIN/2013/53192, Vol- 9-10, Issue - 100-112, Rs. 100/ ISSN : 2348 - 2672 ■ मूल्य : 100 रु /-

सौधात्री प्रकाशन
लहक

सम्पादक
निर्भय देवयांश

E-mail:lahakmonthly@gmail.com

पत्राचार पता : (केवल पत्राचार के लिए)
बी-3, बांदीपुर रोड, मिस्त्रीपाड़ा, बांसद्रोणी, थाना - रिजेन्ट पार्क, कोलकाता - 700070

दिल्ली ब्यूरो - राजू बोहरा
मो. : 09350824380
प्रजा दत्त डबराल
मो. : 09810974880
मुंबई ब्यूरो - अमरनाथ
मो. : 09833188133
लखनऊ ब्यूरो - सुरेश कुमार
मो. : 08009824098
पटना ब्यूरो - आलोक नंदन शर्मा
मो. :06305978747

विधि सलाहकार
शम्भुनाथ राय (कलकत्ता हाईकोर्ट)

1. Name of the A/C	:Saudhatri Prakashan
2. Name of the Bank	:Indian Bank
3. Name of the Branch	:Central Avenue, Kolkata - 700012
4. Address of the Bank	:Indian Bank Central Avenue, Kolkata - 700012
5. MICR	: 700019008
6. Type of Account	: Saving
7. Account No.	: 6056260007
8. IFC Code	: IDIB000C004

Cheque should be in favour of 'Saudhatri Prakashan'

सदस्यता शुल्क : 100 रुपये

व्यक्तियों के लिए : वार्षिक 1500 रु., त्रैवार्षिक 4500 रु., पंचवार्षिक 6000 रु., आजीवन 10,000 रु.

संस्थाओं के लिए : वार्षिक 1600 रु., त्रैवार्षिक 4700 रु., पंचवार्षिक 6500 रु., आजीवन 12,000 रु.

विदेश के लिए : हवाई डाक प्रति अंक 6 डॉलर, वार्षिक 60 डॉलर, जलमार्ग प्रति अंक 4 डॉलर, वार्षिक 30 डॉलर।

मनीऑर्डर/चेक/ बैंक ड्राफ्ट **Saudhatri Prakashan** के नाम से भेजें।

अंक 37

दिसंबर 2021-दिसंबर 2022 ■ अंक : 100-112 (संयुक्तांक)

इस अंक में :

सम्पादकीय : *निर्भय देवयांश*

5. 'अथातो चित्त जिज्ञासा'- एक चुनौतीपूर्ण कार्य

7. **पारखी नजर : पत्र-संसार**

9. यह नवजातिवाद क्या होता है? *कैलाश दहिया*

12. साहित्य की प्रकृति और प्रवृत्ति! : *सिद्धेश*

13. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का साहित्य-विमर्श : *श्रीभगवान सिंह*

20. जॉक लकान के सिद्धांतों की गहनता में प्रवेश का द्वार है अभिनवगुप्त : *अरुण माहेश्वरी*

37. हिंदी विभागों की मनसबदारियां: *कर्ण सिंह चौहान*

चन्द्रकिशोर जायसवाल पर विशेष:

41. चन्द्रकिशोर जायसवाल का रचना संसार : *कल्लोल चक्रवर्ती*

47. सृजनात्मक साहित्य की अनुवांशिकी: संदर्भ चन्द्रकिशोर जायसवाल की कहानियाँ : *धनेश दत्त पाण्डेय*

55. प्रेम की धड़कन और जीवन का संगीत: नकबेसर कागा ले भागा : *पंकज साहा*

57. चर्चा के हाशिए में सिमटा एक प्रतिनिधि कथाकार : *विद्याभूषण*

60. हिन्दी-हिन्दुस्तानी ग़ज़ल को दिशाएँ देतीं महिला ग़ज़लकार: *विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'*

73. साहित्य साधक दिनेश्वर प्रसाद : *इला प्रसाद*

76. स्मृतियों की अनुगूँज: *कुसुम जैन*

77. शैलेन्द्र के गीतों में मानवीय संवेदना : *गोपाल किशोर सक्सेना*

79. गांधी और चाणक्य एक तुलनात्मक अध्ययन: *एम.डी. सिंह*

कविताएँ / ग़ज़लें :

78. श्रवण गर्ग 92. गीतेश शर्मा 93. महेन्द्र नेह 95. कामाख्या नारायण सिंह 96. देवेन्द्र आर्य 97. रमाकांत नीलकंठ 98. धीरेन्द्र श्रीवास्तव 99. सरला माहेश्वरी 103. अनिल विभाकर 105. विजय सराफ 'मीनागी' 106. सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी 108. संजय कुमार सिंह 110. राकेश भारतीय 111. आशा सिंह सिकरवार 112. अरुण सातले 114. मिथिलेश कुमार मिश्र 'दर्द' 115. कैलाश दहिया 119. त्रिलोक महावर 121. सुरेश कुमार 122. सत्य प्रकाश दुबे 123. लक्ष्मीनारायण पयोधि 124. आचार्य मूसा खान अशान्त बाराबंकवी 125. विजय स्वर्णकार 126. आर्य हरीश कोशलपुरी 150. जितेन्द्र धीर

Printer and Publisher : Nirbhay Devyansh, on behalf of owner Saudhatri Prakashan,
Printed at : Shikshan , 50, Sitaram Ghosh Street, Kolkata - 700009
Published at : B-3 Bandipur Road, MistryPara, Bansdroni, P.S.- Regent Park, Kolkata- 700070
Editor : Nirbhay Devyansh

© सर्वाधिकार सुरक्षित
- प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।
- प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- समस्त विवाद कलकत्ता न्यायालय के अन्तर्गत विचाराधीन होगा।

लहक

कहानी/ लघुकथा:

127. क़तरा क़तरा जिंदगी : *सिद्धेश*

129. ''ढूंढ वाय लइयों मोरे महाराज पायलिया खो गई सेजों में'': *साधना कांति कुमार*

132. राम 'बाड़ी' की सुनो : *दीर्घ नारायण*

136. रंग में भंग: *महेन्द्र नारायण पंकज*

139. लवकी: *मानेश्वर मनुज*

143. गीतेश शर्मा को याद करते हुए: *परशुराम*

144. **लघुकथाएँ**: *लवलेश दत्त* 147 . श्यामबाबू शर्मा

145. **डायरी** : करोनाकाल में दिनचर्या : *निशान्त*

स्मृति-शेष:

148. कथाकार अवधनारायण सिंह: कुछ यादें-कुछ बातें: *कपिल आर्य*

149. गोपी चंद नारंग : '... दो गज जमीं भी न मिली, कू-ए-यार में' : *भूमिका द्विवेदी अश्क*

150. **प्रेरक विचार**: अफलता को चुनौती मानें : *विनोद अग्रवाल*

151. **ललित निबंध** : सेतुबंध पर गिलहरी : *गोविन्द गुंजन*

154. ध्रुवदेव मिश्र पाषाणजी की रचना-यात्रा विविधताओं से भरी है: *राकेश तिवारी*

समीक्षाएँ :

155. निशांत का कोहरा घना : आज़ादी की क्रांतिधारा का सृजनात्मक पाठ : *सूर्यनारायण रणसुभे*

158. एक दिन अदम गोंडवी के दर पर! : *सुशील सीतापुरी*

159. प्रवासी साहित्यकार का महत्वपूर्ण ग्रंथ: रामदेव धुरंधर की रचनाधर्मिता : *राजेश कुमार सिंह ' श्रेयस'*

162. 'बहस के मुद्दे' सर्वकालीन यथार्थपरक चिन्तन: *विजय कुमार तिवारी*

167. 'मधुपुर आबाद रहे' : *बाबूलाल शर्मा*

169. सूक्ष्म निरीक्षण और विश्लेषनात्मक विवेक से परिपूर्ण शाइर की ग़ज़ल : *द्विजेन्द्र द्विज*

172. 'प्रवासी प्रतिनिधि कहानियाँ' और प्रवासी-कथा चिन्तन: *विजय कु तिवारी*

178. भीड़ और भेड़िए-घाव करें गंभीर : *कृष्ण 1बिहारी पाठक*

181. प्रवासी कवि सुरेश पांडे का काव्य-संग्रह 'मुस्कुराता रूप तेरा' : *ओम सपरा*

182. विमर्श पर विमर्श करती सम्यक् दृष्टि : पुनिता जैन

185. तपती रेत नदी की : कविताएँ वो, जो झंकृत कर दें : *मुकेश कुमार सिन्हा*

190. संघर्षशील चेतना एवं मूल्यबोध की कविताएँ : *चंद्रशेखर सिंह*

195. जयराम सिंह की कहानियाँ : वाद से मुक्त संवाद : *उमाशंकर सिंह परमार*

199. कहानी-संग्रह 'पूर्वोत्तर राजधानी एक्सप्रेस' की समीक्षा : *प्रभाष पाठक*

साहित्यिक गतिविधियाँ:

202. एस.आर.हरनोट के उपन्यास 'नदी-रंग जैसी लड़की' का अब्दुल बिस्मिल्लाह और सूरज पालीवाल द्वारा शिमला में लोकार्पण

171. महेन्द्र नारायण पंकज: जन लेखक संघ का चतुर्थ राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न /177. जन लेखक संघ राजस्थान का द्वितीय राज्य सम्मेलन संपन्न / 203. 'मधेपुरा बदलती दिशा और दशा' पुस्तक की समीक्षात्मक संगोष्ठी सम्पन्न

204. कमलाकांत त्रिपाठी के उपन्यास 'निशांत का कोहरा घना' पर परिचर्चा

206. यादगार रहा द्विवेदी स्मृति संरक्षण अभियान का रजत पर्व : *कृपाशंकर चौबे*

स्मरण सभा :

209. कथाकार अवधनारायण सिंह की याद में स्मरण सभा : *हितेन्द्र पटेल*

व्यंग्य:

210. गुलाबी चेहरों का कैक्टस शोर : *बी. एल. आच्छा*

सम्यक् संवाद :

'अथातो चित्त जिज्ञासा'- एक चुनौतीपूर्ण कार्य

(अरुण माहेश्वरी की सद्य प्रकाशित पुस्तक)

निर्भय देवयांश

पतंजलि अपने योगशास्त्र में कहते हैं-''जब तक भाषा से चिंता की जाती रहेगी, तब तक विकल्प रहेगा ही; निर्विकल्प-ज्ञान होने पर सत्य ज्ञान होता है। वह कैसे होता है, यह योग-शास्त्र में विवृत है। (1/48, योगसूत्र)

अभिनवगुप्त ने निर्भीकता के साथ कहा है कि इस प्रत्यभिज्ञा दर्शन का सम्बन्ध मानवमात्र से है, चाहे वे किसी भी मत-संप्रदाय के अनुयायी (सर्वोपकारित्व-मुक्तम्) क्यों न हों।

जॉक लकान, फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक अपने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांतों के माध्यम से अभिनवगुप्त के 'ईश्वरप्रत्यभिज्ञा दर्शन' तक पहुंचते हैं। अपने आपको मशहूर मनोवैज्ञानिक सिग्मंड फ्रायड के हर हाल में 'चेला' से कुछ कम न समझने वाले लकान को अभिनवगुप्त के प्रत्यभिज्ञा दर्शन तक पहुंचने की आाखिर जरूरत क्यों पड़ी होगी ? क्यों जरूरत रही होगी ? जबकि पश्चिम का यह शोर कि उसने सब कुछ पा लिया है, अब उसे किसी और के पास जाने की जरूरत नहीं! वामपंथी लेखक-विचारक अरुण माहेश्वरी की सूर्य प्रकाशन मंदिर से सद्य प्रकाशित पुस्तक 'अथातो चित्त जिज्ञासा' में लकान-अभिनवगुप्त मिलन केंद्र पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। यह चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि इस तरह की पुस्तक हिंदी में प्राय: दुर्लभ है।

कवि-कला समीक्षक अशोक वाजपेयी लोकार्पण समारोह में 'अथातो चित्त जिज्ञासा' को एक कठिन पुस्तक बताते हैं। प्रसिद्ध लेखक पुरुषोत्तम अग्रवाल, ओम थानवी, ममता कालिया भी समारोह में 'पुस्तक की कठिनता' को किसी न किसी रूप में मानते हैं और अब उसे उपलबधि के रूप में स्वीकार भी करते हैं।

लकान कैसे अभिनवगुप्त तक पहुंचते हैं, अरुण जी उस प्रकरण के बारे में लिखते हैं- ''बहुत से विश्लेषक इस प्रकार के दो परस्पर-विरोधी पदों को एक साथ जोड़ कर रखने पर ठिठक जाते हैं जैसे अचेतन विचार(Unconscious thought)। लकान इसे उनकी द्वंद्वात्मक अज्ञता कहते हैं। यह अज्ञता किसी भी सिद्ध कथन से शब्दार्थ विज्ञान के सामने खड़ी होने वाली क्लासिकल समस्या को देखकर घबड़ा जाया करती है। यहीं पर लकान ने ही आनन्दवर्धन के ध्वन्यालोक से एक उदाहरण लिया है। वे टीकाकार अभिनवगुप्त का हमेशा हिंदू सौंदर्यशास्त्री के रूप में जिक्र किया करते थे और सूक्ष्मता से जांच करने पर साफ पता चलता है कि शब्द के ध्वन्यात्मक पहलू के प्रतीकात्मक प्रभाव पर भारत में जो काम हुआ था, फ्रायड और लकान उससे काफी परिचित थे और उसके महत्व को समझते थे।''

लकान ने इसी संदर्भ में अभिनवगुप्त की टीका का जो उदाहरण लिया था 'गंगायां घोष:' (a hamlet on the Ganges) वाक्य का था। अभिनवगुप्त ने इसके बारे में लिखा था कि घोष पद का अर्थ अभीरपल्ली (झोपड़ी) है। ... प्रत्यक्षत: हम देखते हैं कि जलप्रवाह में झोपड़ी रुक नहीं सकती। वह बह जाएगी। इस प्रत्यक्ष बाधित अन्वयानुपपत्ति (दोनों के बीच असंगति) के कारण यहां मुख्यार्थ का बाध होता है। इस पर अभिनव का कहना था कि इस मुख्यार्थ के बाध के कारण ही यहां पर लक्षणाशक्ति की प्रवृत्ति होती है।

इस पर आपत्ति करने वाले को जवाब देते हुए अभिनवगुप्त ने तात्पर्यानुपपत्ति से जोड़ा। दो पदों की असंगतिपूर्ण संयुक्ति के पीछे के तात्पर्य से। अभिनव इसकी चर्चा वहां करते हैं जहां वे 'सिंहो वटु' की चर्चा करते हुए बताते हैं कि इसमें काव्यत्व नहीं है, और कहते हैं कि लक्षणा तभी मुमकिन है जब 1. मुख्यार्थ का बाध हो, 2. मुख्यार्थ का संयोग हो 3. प्रयोजन भी हो।

बहुत सूक्ष्मता से गौर करने की बात है कि यहां शब्द की लक्षणा शक्ति कैसे प्रकारांतर से फ्रायड के मनोरोग के लक्षणों के समानार्थी प्रतीत हो रही है-जिसमें मन में कुछ अटका होना, कुछ खास कहना और विशेष उद्देश्य से कहना निश्चित तौर पर शामिल होता है। प्रमाता के आचरण के पीछे का तात्पर्य खुलने पर अर्थ की बाधा खत्म हो जाती है।

लकान जहां 'मनोविश्लेषण की तकनीक में व्याख्या और रोगी के संकेत की गूंजों' (The Resonances of Interpretation and the Time of the Subject in Psychoanalytic Technique) के बारे में चर्चा करते हैं, उसमें भी वे भारत के ध्वनि सिद्धांत की बात करते हैं। वे कहते हैं कि यह हिंदू परंपरा हमें ध्वनि के बारे में सिखाती है, कथन के उस गुण को परिभाषित करती है जिससे जो कहा नहीं गया, उसे संप्रेषित किया जाता है।

यहां लकान ने आनंदवर्धन से ही एक और उदाहाहण लिया है जिसका उन्होंने ध्वन्यालोक में वहां जिक्र किया था जहां वे 'प्रतीयमान